रिकॉर्ड :– नैनहीन को राह दिखा प्रभु..... ॐ पिताश्री 7/3/63

ओमशान्ति। बच्चे जानते हैं कि बाप राह बताते हैं। राह कहा जाता है मार्ग को। जैसे सुभाष मार्ग, गाँधी मार्ग नाम लिखते हैं। मार्ग अर्थात् रोड। तो ये भक्त पुकारते हैं भगवान को; परन्तु भक्तों को पता नहीं है कि भगवान के साथ मिलने का रास्ता क्या है। अभी तुम जानते हो कि बरोबर एक है ज्ञानमार्ग, ज्ञान रोड और दूसरा है भक्तिमार्ग अथवा भक्ति रोड। भक्ति रोड से जाने से दुर्गति त(रफ) जाते हैं और ज्ञान रोड से जाने से सद्गति तरफ जाते हैं। वास्तव में, इसका नाम रखना चाहिए सद्गति मार्ग। जैसे कोई दिलवाड़ा जाना चाहे तो उनको वो मार्ग बताएँगे ना! हमारे हैं ही दो मार्ग। एक भक्ति का रोड, जो दुर्गति अथवा काँटों के जंगल तरफ को जाता है। दूसरा फिर है ज्ञान रोड, वह ले जाता है स्वर्ग अथवा गार्डन ऑफ फ्लॉवर्स तरफ। एक है स्वर्ग तरफ रोड, दूसरा है नर्क के तरफ रोड। स्वर्ग का रोड कौन बता सकता है? अवश्य जो स्वर्ग की स्थापना करने वाला होगा। एक प० ही स्वर्ग का रचता है, जिसको हेविनली गॉड फादर कहते हैं। दूसरा तुम राम की सेना अथवा शक्ति सेना बता सकती हो। बच्चों को समझाया गया है कि रावण की भी सेना गाई हुई है। इन शिवोहम् कहने वालों को कुंभकर्ण वा हिरण्यकश्यप कहा गया है। वो असुर फिर नर्क के तरफ ले जाते हैं। एक है ईश्वर, दूसरे हैं असुर। रावण को भी असुर कहा गया है। रावण को 5 शीश दिखाते हैं गोया 5 असुर विकार हो गए, जो इस समय सभी में व्यापक हैं। राम और रावण गाए हुए हैं। राम बताएँगे स्वर्ग का मार्ग। गाते हैं ना सबका सद्गति दाता राम और दुर्गति का मार्ग बताने वाली है माया रावण। उनका निवास है द्वापर–कलियुग में। राम का आना होता है संगम में। तो इससे सिद्ध है कि राम अलग है, रावण अलग है। राम अर्थात् भगवान को भक्त बुलाते हैं कि आकर हमको स्वर्ग का रास्ता बताओ। अब भगवान तो हुआ निराकार, साकार मनुष्य की तो बात नहीं। न देवताओं को भगवान कहा जा सकता है। तो स्वर्ग का रास्ता बताने वाला है एक। उनको कहा जाता है पतित–पावन। यहाँ तो अनेक गुरु हैं। कलियुग में सभी उल्टा मार्ग बताने वाले गुरु हैं। ईश्वर आए सुल्टा मार्ग बताते हैं। बाकी कोई आकार अथवा साकार मनुष्य, चाहे देवता स्वर्ग का मार्ग बता नहीं सकता। ब्रह्मा खुद कहते हैं कि मैं भी स्वर्ग का मार्ग नहीं बता सकता। मनुष्य कोई जानते तब तो पुकारते हैं– हे भगवान! आकर हमको रास्ता बताओ। हम अंधे हैं। भल गुरु कहते हैं कि हम रास्ता बताएँगे; परन्तु वो तो काँटों के जंगल में ले आए। सभी नैनहीन बन गए हैं। अंधों की लाठी है प०। उसके लिए कहते हैं– ज्ञानसूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश। गाया भी जाता है– ब्रह्मा की रात, ब्रह्मा का दिन। हमेशा बड़ों का नाम रखा जाता है ना! इसलिए गाया हुआ है– ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात। शिव का दिन–रात तो होता नहीं, न ब्र०वि०शं० का होता है। ब्रह्मा ही भक्ति और ज्ञान के मार्ग तय करते हैं। ब्रह्मा की आयु भी 100 वर्ष दिखाई गई है। तो ज़रूर स्थूल शरीर में होगा न! तब तो कहते हैं, ब्रह्मा भी खतम हो गया। बरोबर विवेक कहता है, ब्रह्मा भी आखिर जाएगा। कहाँ तक जिएगा? सामने विनाश ज्वाला खड़ी है। जास्ती समय खैंच न सकेंगे। कहते हैं, एक/दो पर जाँच रखें; परन्तु इस पर भी आपस में डाह नहीं होता। आखिर लड़ पड़ेंगे। ऐसे समय स्वर्ग स्थापन करने वाला आए ज्ञानामृत पिला रहे हैं। वो है ज्ञान का सागर। ओशन ऑफ नॉलेज, ज्ञान का सागर, सुख का सागर, पवित्रता का सागर। इस सागर से फिर नदियाँ निकलती हैं। नदियाँ एक समान नहीं होती हैं। कोई बड़ी तो कोई छोटी। तो अब तुम जानते हो कि अंधों की लाठी एक है, जो स्वर्ग का मार्ग बताते हैं। बाकी सभी गुरु–गुसाईं नर्क का रास्ता बताते हैं। जब तक कलियुग है तो भक्ति रोड है। ज्ञानमार्ग में है सद्गति; कलियुग में है दुर्गति। अब स्वर्ग का मार्ग बताने वाले बाप कहते हैं कि अनेक जन्म ये वेद–शास्त्र पढ़ा, उनमें तो ज्ञान है नहीं। ज्ञान का ओशन

तो मैं हूँ। ज्ञानमार्ग एक ही है। बताने वाला भी एक है। समय भी एक है। एक ही समय सभी को गति–सद्गति मिल जाती है। वहाँ कोई दुर्गति वाला होगा ही नहीं। तो आधा कल्प है ज्ञानमार्ग, आधा कल्प है भक्तिमार्ग। ऐसे नहीं कि कोई आधा कल्प ज्ञान मिलता रहेगा। नहीं। भगवान आकर एक ही बार सभी की सद्गति करते हैं। दुर्गति वाली अपवित्र आत्माएँ न स्वर्ग में रह सकती हैं, न मूलवतन में रह सकती हैं। मनुष्यों में तो आत्मा का ज्ञान भी नहीं है। इसलिए कह देते हैं– आत्मा सो प० अथवा आत्मा निर्लेप है। यह भी नहीं जानते कि आत्मा इमॉर्टल है। कहते हैं, आत्मा तत्व में लीन हो जाएगी वा कहते हैं, आत्मा प० का बुदबुदा है। भक्तिमार्ग में अनेक बातें हैं। कितने वेद–शास्त्र हैं! अथाह गुरु हैं। सत्गुरु तो एक है। वो आता है तो सभी गुरु खतम हो जाते हैं। सभी का सद्गति दाता, पतित–पावन वो एक। ज्ञान का सागर चाहिए ना! वो हर बात का ओशन है। उस एक से सबको वर्सा मिलता है। पानी का सागर भी एक है। आजकल तो उसके भी टुकड़े–2 कर दिए हैं। सागर में भी हदें मुकर्रर कर दी हैं। तो भगवान को भी टुकड़े–2 कर दिए हैं। भित्तर–ठिक्कर सभी में प० को ठोक दिया है। वास्तव में सद्गति दाता तो एक है। सतयुग में सभी सद्गति में हैं। यहाँ सुख–दुख दोनों हैं; परन्तु सुख भी है माया का, जिसको सन्यासी काग विष्टा समान समझते हैं। उन्हों को वैकुंठ के सुख का तो पता नहीं। तो मनुष्यों को समझाना चाहिए कि सतयुगी देवी–देवताओं की जो इतनी महिमा है, उनको ऐसा किसने बनाया? (वो) पतित–पावन बाबा अब कहते हैं– मुझे याद करो। अपने को नंगा समझो। मुझे याद करने से तेरे विकर्म विनाश होंगे। उनके लिए कहा जाता है कि हज़ारों सूर्य से भी यह तेजस्वी है। तो उनसे योग लगाने से पाप भस्म हो जाएँगे। पाप भी 63 जन्मों के हैं। जहाँ जीओ तहाँ पाप भस्म करने लिए योग लगाना पड़े। आत्मा प्युअर हो गई, फिर तो नया शरीर चाहिए। फिर अंत मते सो गते। जब ब्रह्मा कर्मातीत अवस्था को पाएँगे तो ब्रह्मा मुखवंशावली भी नम्बरवार कर्मातीत अवस्था को पाएगी, फिर ज्ञान भी खतम हो जाएगा। पढ़ाई पूरी हुई तो टीचर की दरकार नहीं रहेगी। फिर तो दुनिया में हाहाकार होगा। अब देखो, कितनी ड्यूटी डालते रहते हैं। आखिर मनुष्य तंग होंगे तो झगड़े आदि होंगे। भारत में सिविल वार तो होनी है। नेचरल कैलेमिटीज़ भी होगी। उस तरफ बॉम्ब्स से विनाश होगा। मनुष्य तो समझते हैं, कल्प लाखों वर्षों का है। इतना दुख है, अब और क्या होगा! गाँधी भी कहते थे, अब नया भारत, रामराज्य चाहिए। रावण राज्य नहीं चाहिए तो ज़रूर रावण राज्य का विनाश चाहिए। जब तक ये कलियुगी दुनिया टूटे नहीं तब तक नई दुनिया कैसे बनेगी। ये तो कल्प–2 पाँच–2 हज़ार वर्ष की बात है। 5 हज़ार वर्ष से पुरानी कोई वस्तु होती नहीं। पुराने ते पुरानी चीज़ शिवलिंग को रखेंगे। सतयुग में तो पुरानी चीज़ें होती नहीं। वहाँ खोदते नहीं। द्वापर में भी नहीं खोदते, वहाँ भी हमको बहुत मिल्कियत रहती है। ये खोदना तब आरंभ करते हैं जब धन खुदना(खूटना) आरंभ होता है। बाकी सतयुग में तो अथाह धन है। वहाँ खाणियाँ आदि तो खोदते हैं, सोना–हीरे आदि तो निकालते हैं। वहाँ सब नया है। वहाँ खाणियाँ भी भरतू हैं। ये तो पीछे खाने ..... खूट जाता है। (अधूरी मुरली)